बाल मन कैमूर

माह मार्च अंक 3

संपादक धीरज कुमार

प्यारे बच्चो

नमस्कार

आप सभी का प्यार और स्नेह हमे लगातार व्हाट्सएप के माध्यम से प्राप्त हो रहे है।जिसके कारण मुझे और भी नया और अच्छा करने की प्रेरणा प्राप्त हो रही है। इस पत्रिका के तीसरे अंक को प्रकाशित कर आपको समर्पित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है ।हम पूरी कोशिश कर रहे है की आप सभी को पत्रिका का अगला अंक प्राप्त होते रहे ।इसके साथ ही सरकारी विद्यालय के बच्चो में इस पत्रिका के माध्यम से एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा है।आप सभी की ढेरो प्रतिभा हमे प्राप्त हो रही है।हम पूरा प्रयास कर रहे है की आपकी प्रतिभा को सम्मानित करते हुए उसे प्रकाशित करे।

हम आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास करते है की टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित बाल मन कैमूर के द्वारा आपकी प्रतिभा को केवल जिला स्तर पर ही नही अपितु राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर भी एक अलग पहचान प्राप्त हो।हमारी पूरी कोशिश है की हम बेहतर से भी बेहतर करे। यदि अनजाने में किसी प्रकार की त्रुटि या भूल हुई होगी तो हम उसे सुधार करने की पूरी कोशिश करेंगे।भूल-चुक के लिए हम क्षमाप्रार्थी है।आपके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ।

आपका
धीरज कुमार
U.M.S. सिलौटा भभुआ कैमूर

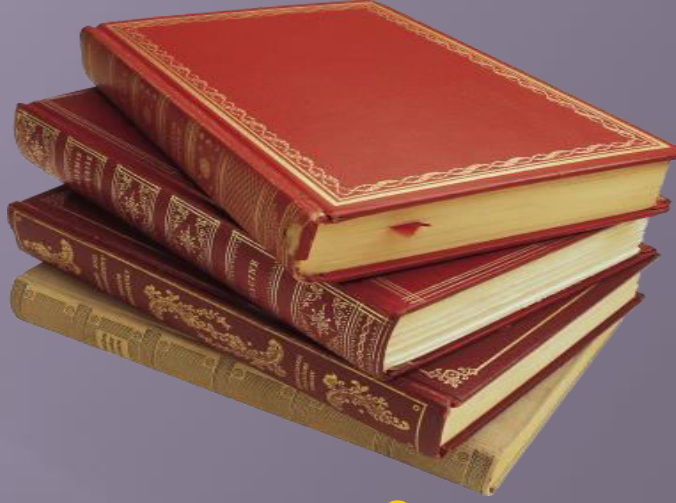

प्रधान संपादक=धीरज कुमार(UMS सिलौटा भभुआ)

सहयोगकर्ता सदस्य:-
1.अवधेश राम(UMS बहुवरा)
2. सोनी कुमारी कुशवाहा (मध्य विद्यालय अखलासपुर)
3. आशा पांडे (मध्य विद्यालय अखलासपुर)
4.राजेश कुमार (+2 विद्यालय कोरिगावा बहेरा)

प्रेरक प्रसंग

एक तालाब में बहुत सारे मेंढक रहते थे। उस तालाब के ठीक बीचोंबीच एक बड़ा-सा लोहे का खंभा था जिसे वहां के राजा ने लगवाया हुआ था। एक दिन तालाब के मेंढको ने निश्चय किया कि "क्यों ना इस खम्भे पर चढ़ने के लिए प्रतियोगिता रखी जाये", जो भी इस खंभे पर चढ़ जायेगा, उसको प्रतियोगिता का विजेता माना जायेगा।
प्रतियोगिया का दिन निश्चित किया गया। कुछ दिनों बाद रेस का दिन आ गया। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए वहां कई मेढ़क एकत्रित हुए। पास के तालाब से भी कई मेंढ़क रेस में हिस्सा लेने के लिए पहुंचे हुए थे और प्रतियोगिता को देखने के लिए भी बहुत सारे मेंढ़क वहां एकत्रित हुए। रेस का आरंभ होते ही चारों ओर शोर ही शोर था। सब उस लोहे के बड़े से खम्भे को देख कर कहने लगे की - इस पर चढ़ना नामुमकिन है। इसे तो कोई भी नहीं कर पायेगा। इस खम्भे पर तो चढ़ा ही नहीं जा सकता।

कभी कोई यह रेस पूरी नहीं कर पाएगा, और ऐसा हो भी रहा था, जो भी मेढ़क खम्भे पर चढ़ने का प्रयास करता, वो खम्भे के चिकने एवं काफी ऊँचा होने के कारण थोड़ा सा ऊपर जाकर नीचे गिर जाता। बार बार कोशिश करने के बाद भी कोई ऊपर खम्भे पर नहीं पहुँच पा रहा था। अब तक काफी मेंढ़क हार मान गए थे और कई मेंढ़क गिरने के बाद भी अपनी कोशिश जारी रखे हुए थे। इसके साथ-साथ अभी भी रेस देखने आए मेंढक जोर-जोर से चिल्लाए जा रहे थे "अरे यह नहीं हो सकता"।

"यह असंभव है" ।कोई इतने ऊँचे खम्भे पर चढ़ ही नहीं सकता।" आदि और ऐसा बार बार सुन सुन कर काफी मेंढक हार मान बैठे और उन्होंने भी प्रयास करना छोड़ दिया। और अब वो भी उन मेंढको का साथ देने लगे जो जोर-जोर से चिल्लाने लगे। लेकिन उन्ही मे से एक छोटा मेंढक लगातार कोशिश करने के कारण खम्भे पर जा पंहुचा, हालाँकि वो भी काफी बार गिरा, उठा, प्रयास किया तब कही जाकर वो सफलता पूर्वक खम्भे पर पहुंचा।वह रेस का विजेता घोषित किया गया। उसको विजेता देखकर, मेढ़को ने उसकी सफलता का कारण पूछा की यह असंभव कार्य तुमने कैसे किया, यह तो नामुमकिन था, यहाँ सफलता कैसे प्राप्त की, कृपया हमे भी बताए। तभी पीछे से एक मेंढ़क की आवाज़ आयी "अरे उससे क्या पूछते हो वो तो बहरा है।"

फिर भी मेढको ने विजेता मेंढक से पता करने के लिए एक ऐसे मेढक की मदद ली, जो उसकी सफलता का कारण जान सके, विजेता मेंढक ने बताया की मैं बहरा हूँ। मुझे सुनाई नही देता, लेकिन जब आप लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे, तो मुझे लगा जैसे आप मुझसे कह रहे हो की "यह तुम कर सकते हो, यह तुम्हारे लिए मुमकिन है" इन्ही शब्दों ने मुझे सफलता दिलाई है।
यह कहानी काफी हमारी जिंदगी से भी मिलती जुलती है, क्योंकि हम बाहर दुनिया की सुनते है जो हमेशा हमसे कहती है की "तुम यह नही कर सकते, सफल नही हो सकते, लेकिन दुसरो की बातों में आ कर अपने लक्ष्य को पाने से चुक जाते है, जिसके कारण हम एक औसत जीवन जीते है। इसलिए आज से हमे उन सभी दृश्य एवं लोगो के प्रति अंधे एवं बहरे हो जाना चाहिए, जो हमे हमारे लक्ष्य से भटकाते है। ऐसा करने से आपको आपकी मंज़िल पाने से कोई नही रोक सकता।(सोशल मीडिया से)

नन्हे कलाकार

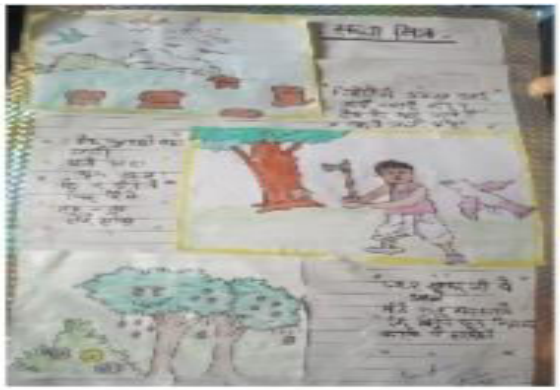

मध्य विद्यालय अखलासपुर भभुआ ,NPS भटवलिया नुआव,RKMS डहरक रामगढ़ के बच्चे

अजब गजब

1.मनुष्य के पैर के पंजे में 26 हड्डियां है ।

2.हमारे नाखून को शुरुआती हिस्से से आखिरी हिस्से तक बढ़ने में पूरे 6 महीने लगते है।

3.छिकते समय मनुष्य की दोनो आंखे खुली रहना,असंभव है।

4.एक रिसर्च के अनुसार गिलहरियां सालभर में जाने-अनजाने में हजारों पेड़ लगा देती है,क्योंकि वे बीज रखकर भूल जाती है की उन्होंने उसे कहां रखा था।

5.जॉर्डन और इजराइल के बीच स्थित मृत सागर(Dead Sea) ऐसा सागर है ,जिसमे कोई डूबता नही ।

गणित आकृति पहेली

मुझे पहचानो मैं हूं कौन?

(A) गोल-गोल सा दिखता मैं।
रोटी जैसा दिखता मैं।
ना दिखते मेरे हाथ-पैर।
फिर भी दिखता गोल ही मैं।

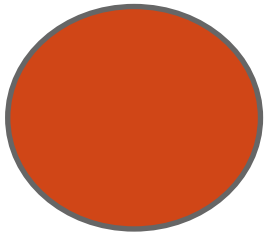

(B) तीन भुजाओं से घिरा हुआ हूं।
मुझमें होते तीन कोण।।
जिसको आता बता दो झटपट।
वरना रह जाओगे मौन।।

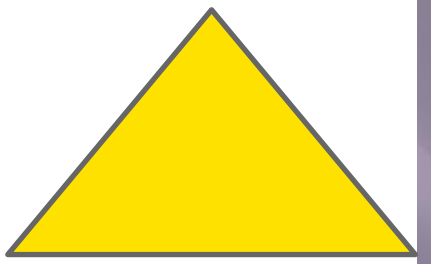

(C) लूडो और शतरंज को देखो।
मुझको तुम पहचानो भाई।।
चार बराबर भुजा और चार समकोण से।
नाम बता खा लो मिठाई।।

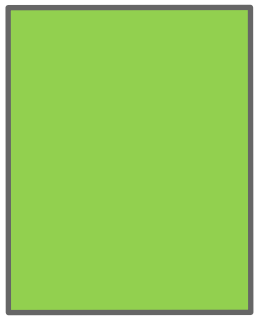

(D) मुझसे होते चार भुजाएं।
आमने सामने भुजा बराबर।।
होते मुझमें चार समकोण।
नाम बता कर बनो महान।।

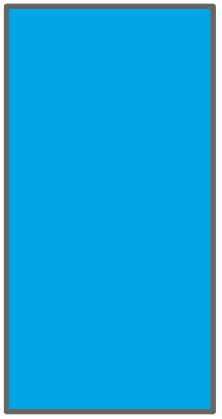

पहेलियां

1.परत - परत है कोरा देख,कलम चला लिखते हम लेख।
स्याही संगत भरते भाव, कोई फाड़ बनाएं जहाज।।

2.मेरा नाम बताओ बच्चो, तो मानू तुम सब हो वीर।
फ्रीज में रख कर लो ठंडा ,फिर भी मैं रह जाऊं गरम।।

3.पहनी है पीली साड़ी, खेतों की मैं रानी हूं।
बसंत बहार की पक्की,मैं ही एक निशानी हूं।।

4.इसका कोई हाथ न पैर,करता है दुनिया की सैर।
घटे -बढ़े इसका आकार, नीलगगन का राजकुमार।।

5.लाल,गुलाबी,सफेद और पीला,रंग अनेक नाम है प्यारा।
कांटो में गुजरे है सब दिन,फूलो में मैं सबसे न्यारा।।

1.कागज 2.गरम मसाला 3.सरसों की फसल 4.चांद
5.गुलाब

आपके पेंटिग 🎨🖌️

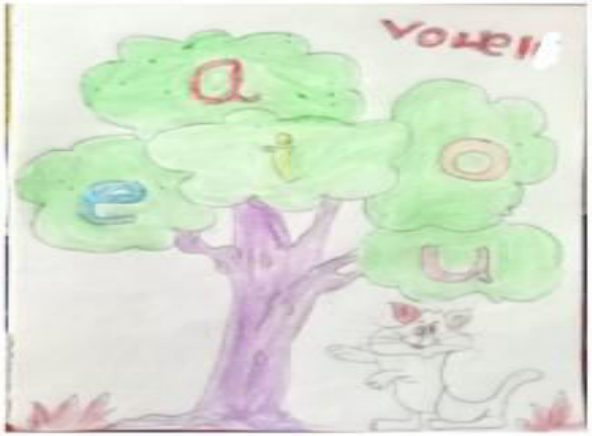

1.प्रियांशी कुमारी वर्ग 6 ums बहेरी भभुआ 2.श्वेता रंजन वर्ग 3.Nps भटवलिया नुआंव 3.अदिति कुमारी Ms अखलासपुर भभुआ 4.प्रियंका कुमारी वर्ग 7 Ms अखलासपुर 5.अर्चना कुमारी वर्ग 1 कझार घाट कुदरा 6.अर्चना यादव UHS हरदासपुर कुदरा

कविता

ये हमारी भी परीक्षा है।

परीक्षा भले तुम्हारी हो,
पास फेल हम होते हैं ।
अपने बचपन के सपनों को,
हम तुममें ही तो संजोते हैं ।
परीक्षा भले तुम्हारी हो,
पास फेल हम होते हैं ।
आशा उम्मीदें तुमसे है ,
जीवन में प्रगति करना तुम ।
आकाश भले ही ऊंचा हो ,
नित्य उन्नति ही करना तुम।
निज मन की बातें क्या करूं ,
मैं प्रसन्नता का सुख लेती हूं ।
जब तुम आगे बढ़ जाते हो ,
मैं भी आनंदित होती हूं ।
मार्ग प्रशस्त हो भले तुम्हारे,
नाम हमारे होते हैं ।
परीक्षा भले तुम्हारी हो ,
पास फेल हम होते हैं ।

खुशबू कुमारी
प्रखंड शिक्षिका
उत्क्रमित मध्य विद्यालय दुघरा भभुआ

कविता

स्वर कोकिला को नमन।

सुर की जो वीरांगना थी,
सुर जिनकी ताज थी।
शत-शत नमन स्वर कोकिला को,
जिन पर हमारी नाज थी।।
स्निग्ध हृदय,मनोरम स्वर
इनकी अलग पहचान थी ।
शत -शत नमन स्वर कोकिला को
जिन पर हमारी नाज थी।।
व्यधित चमन मुरझा सुमन,
मलिन अनिल गमगीन है।
खो दिया हमने वह स्वर पूंज,
जो विश्व में विख्यात थी।
शत- शत नमन स्वर कोकिला को
जिन पर हमारी नाज थी।।
क्षुब्ध मन सजल नयन
दे रही श्रद्धांजलि,
कैसे करूं श्रद्धा सुमन कांप रही है अंजलि
स्वर जादू ,कर्म रश्मि,
ललित शब्द सरताज थी।
शत-शत नमन स्वर कोकिला को
जिन पर हमारी नाज थी।

पम्मी कुमारी
कन्या मध्य विद्यालय रामगढ़

मेरा विद्यालय मेरी प्रतिष्ठा

विद्यालय शिक्षा का ऐसा मंदिर है, जहां शिक्षक एक पुजारी की तरह दिल से समर्पण भाव से विद्यालय और बच्चो के विकास कार्य में लगे होते है।कुछ ऐसा ही बच्चो के प्रति समर्पण भाव कैमूर जिले के भभुआ प्रखंड पंचायत मिरीया स्थित महाबल भृगनाथ इंटर स्तरीय (+2) विद्यालय कोरिगावा बहेरा में देखने को मिलता है।
ग्रामीण परिवेश में स्थित यह विद्यालय जिला मुख्यालय से 12किमी दूर स्थित है।इस विद्यालय में कई पंचायतों के बच्चे अच्छी पढ़ाई और अनुशासन के कारण पढ़ने आते है।एक समय विद्यालय के पास भवन की काफी दिक्कत थी,फिर भी यहां के सभी शिक्षको के द्वारा सफलतापूर्वक विद्यालय संचालन किया जाता रहा।सभी बच्चो का साफ सफाई के साथ ड्रेस में आना,खेल के प्रति बच्चो को जागरूक करना और विज्ञान के प्रति बच्चो में रोचकता तारीफ योग्य है।विद्यालय का चेतना सत्र आने जाने वाले लोगो का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है।धर्मेंद चौबे (प्रभारी प्रधानाध्यापक) और

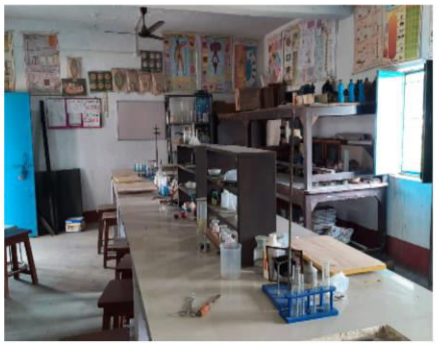

हमारे आदर्श

चित्र में दिए गए चित्र की सहयता से महापुरुषों को पहचाने और उनके नाम हमे व्हाट्सएप करे।आपके नाम अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

टी.एल.एम. द्वारा शिक्षण भाग-3

==========

प्रश्नोत्तरी लूडो गेम :- यह खेल गतिविधि पर आधारित बहुत ही आकर्षक एवं प्रभावी टी.एल.एम.है जिसके माध्यम से बच्चे खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाते हैं। इसे बनाने के लिए गत्ते के चौकोर टुकड़े पर मार्कर पेन से 100 समान वर्गाकार खाने बनाते हैं। नीचे बायें तरफ से शुरू करते हुए एक-एक खाने छोड़कर क्रमशः 1से 50 तक की संख्याओं को खाने में अंकित करेंगे। बाकी बचे 50 खानों में अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर तथा गणित के सांकेतिक चिन्हों को अंकित कर देंगे।एक अलग कागज पर कक्षा स्तर को ध्यान में रखते हुए 50 प्रश्नों का निर्माण करेंगे।बस,आपका टी.एल.एम. तैयार है।

इसे लूडो की तरह चार-पांच बच्चे एक साथ खेल सकते हैं। इसमें एक निर्णायक की भूमिका होगी जिसके हाथ में प्रश्न सेट रहेगा। पहले एक बच्चा लूडो का पासा फेंकेगा।मान लीजिए 3 आया,तो वह अपनी गोटी 3 वाले खाने में रखेगा।अब निर्णायक द्वारा प्रश्न सेट में 3 नंबर पर अंकित प्रश्न पूछा जाएगा। सही उत्तर देने पर 2 अंक दिए जाएंगे। फिर 3 वाले खाने के ठीक पहले वाला संकेत पूछा जाएगा। सही बताने पर बोनस के 1 अंक दिए जाएंगे।इसी तरह सभी बच्चे बारी-बारी से खेलेंगे। अंतिम खाने में पहुंचने पर जिसका स्कोर सबसे ज्यादा रहेगा वह विजेता होगा।

गेम जीतने के चक्कर में बच्चे प्रश्न सेट के प्रश्नों को स्वयं याद कर लेते हैं।

* * * * * * *

अवधेश राम
UMS बहुवारा भभुआ

फरवरी माह के अंक से "चित्र देखो और कहानी लिखो" में चयनित कहानी = मुन्नी गई बाजार

मुन्नी वर्ग 5 में पढ़ने वाली एक छात्रा है।उसका घर गांव में स्थित है।गांव से 5 km की दूरी पर प्रखंड मुख्यालय है।गांव के सभी लोग बाजार में खरीदारी करने के लिए यही आते है।

एक दिन मुन्नी अपने दादाजी के साथ बाजार गई। दादाजी की डाकघर में कोई काम था।वैसे तो आज मोबाइल के जमाने है लेकिन डाकघर में पहुंच कर मैंने लेटर बॉक्स को देखा।दादाजी ने उसमे पत्र डालने वाले जगह को भी एक कागज द्वारा समझाया।

मैं बाजार आ कर बहुत खुश थी।

बाजार में बहुत भीड़ थी।चाय के दुकान पर लोग क्रिकेट मैच का आनंद ले रहे थे।अखबार की दुकान पर दादाजी ने अखबार तो मैने बाल मन पत्रिका खरीदी।बस स्टैंड पर बसे लगी थी,जिसने लोग बैठ कर शहर को जा रहे थे।मुझे दादाजी के साथ बाजार में घूम कर बहुत अच्छा लगा।मैं अपने विद्यालय में जा कर सबको बताऊंगी।

हर्षित राज वर्ग 5
UMS सिलौटा

आप अपने सुझाव और जवाब मोबाईल नंबर 9431680675 पर दे सकते है।